उपन्यास का विकास

अध्याय : उपन्यास का विकास
लेखक: डॉ. कुसुम लता
विभाग / विश्वविद्यालय: दौलतराम महाविद्यालय
उपन्यास का विकास

परिचय/प्रस्तावना/विषय प्रवेश

इस इकाई में हम उपन्यास के विकास पर चर्चा करेंगे। उपन्यास में जीवन की समस्याओं का चित्रण होता है। मानव जीवन से जुड़े विभिन्न प्रसंगों को कथानक का आधार बनाकर उपन्यास का तात्त्विक बनाना जाता है। उपन्यास गद्य साहित्य की एक प्रमुख विधा है। यह 'उप' और 'न्यास' के शब्दों से निकर बना है। 'उप' का अर्थ है सभी और 'न्यास' का अर्थ है रंगना। इस प्रकार इसका अर्थ हुआ सभी रंगना। उपन्यास हमारे मानव के सभी रंगना होता है। मुंशी प्रेमचंद ने स्वयं उपन्यास को मानव जीवन का वचत्र कहा है। प्रेमचंद ने हहदी उपन्यास को नई परिधा और नया मोड़ दिया। यहाँ हम हहदी उपन्यास को विभिन्न कालों में विभाजित करके उसके विकास पर प्रकाश डालेंगे।

पाठ का उद्देश्य

- इस इकाई के द्वारा छात्रों को हहदी उपन्यास के विकास से अवगत किया जायेगा।
- हहदी का पहला उपन्यास दकसे माना जाता है इस पीढ़ी की जाएगी।
- हहदी उपन्यास को विभिन्न कालों में बांटकर उसके विकास पर वितर्क से प्रकाश डाला जाएगा।
- हहदी उपन्यास के क्षेत्र में प्रेमचंद का क्या महत्वपूर्ण योगदान है इसकी जानकारी दी जाएगी।

उपन्यास का विकास

उपन्यास हहदी गद्य साहित्य की एक प्रमुख विधा है। हहदी उपन्यास का उदय सन 1870 से माना जाता है। उपन्यास शब्द दो शब्दों के योग से बना है 'उप' और 'न्यास'। उप का अर्थ है गौर और न्यास का अर्थ है स्थापना किना। हहदी साहित्य में उपन्यास का आविष्कार उपन्यासी शती के अंतिम दौर में हुआ। आधुनिक काल के विकसित गद्य विधाओं में उपन्यास का महत्त्वपूर्ण स्थान है। उपन्यासी शती तक उपन्यास साहित्य पूरे यूरोप में समुद्र हो चुका था। जो भारतीय भाषाएँ संके त तौर पर अंग्रेजी के संस्करों में थी वहाँ इसका आरंभ हहदी से पहले हो गया था। बांग्ला और मराठी ये दोनों ही भाषाएँ अंग्रेजी के संस्करों में थी। बांग्ला में बांधकृत, बंधकृत, राजनाथ टैगोर आदि ने हहदी से पूर्व ही उपन्यास लेखन आरंभ किया। यूरोप, इटली, इंग्लैंड में महत्त्वपूर्ण उपन्यासों की रचना हुई। अंग्रेजी और बांग्ला उपन्यासों की लोकप्रियता से हहदी साहित्य में इस विधा का ध्वनिश गणेश हुआ। आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी ने 'सारस्तवी' में प्रकाशित एक निबंध 'उपन्यास -रहस्य' में इस बात को स्वीकार किया है कि उपन्यास के प्रचलन, विकास एवं मुख्य का श्रेणी देशों के लेखकों को ही है जिसके प्रेरणा लेकर हहदी में भी हहदी उपन्यास रचना की जाने लगी है।

हहदी के प्रथम मौलिक उपन्यास को लेकर प्रायः विधाओं में मतभेद रहा है। इस सम्बन्ध में जिन दो उपन्यासों को लेकर विधाओं में मतभेद हैं वे हैं- समस्तार फुलकोर्ट कृत भाग्यवती (सन 1877) तथा लाला धीरनाथ दास कृत परिवी गुर (1882)। प्रथम उपन्यास में भाग्यवती के चरित्र में मददबहार और मैत्र दो भाग में बताया गया है। उपन्यास के प्रचलन, विकास एवं मुख्य का श्रेणी देशों के संस्करों में लेखक की सुधारबारी प्रृढ़िवत परिलक्षित होती है। भाग्यवती अपनी शिक्षा के बन पर सामाजिक अंधविचारों, पाबंदियों, कुटरियों से
उपन्यास का विकास

अपने साथ -साथ समाज की रचना करती है। 'परिशा गुरु' के द्वारा समाज साधारण वर्तमान समाज और उसकी समस्याओं को विचारित किया गया है। इसमें भारतीय समाज एवं संस्कृति के भेद प्रभावित करते हुए उपदेश वृत्ति का आधार प्रदान किया गया है। 'परिशा गुरु' को अधिकांश विद्वान हिंदी का प्रथम उपन्यास मानते हैं। आचार्य रामचंद्र शुक्ल 'हिंदी साहित्य का इतिहास' पुस्तक में श्रीवनवास दास के 'परिशा गुरु' को हिंदी का प्रथम उपन्यास मानते हैं। दुसरे स्थान पर वे श्रीवनवास फिल्मी के उपन्यास भार्यवत का वर्णन करते हैं। हिंदी उपन्यास के क्षेत्र में क्रांतिकारी परिवर्तन किया।

इसलिए उन्हें आधार मानकर उपन्यास के विकासक्रम को चार वर्गों में विभाजित किया गया है।

(1.) प्रेमचंद पूर्व युग का उपन्यास साहित्य

(2.) प्रेमचंद युग का उपन्यास साहित्य

(3.) प्रेमचंदोत्तर युग का उपन्यास साहित्य

(4.) समकालीन उपन्यास साहित्य

(1.) प्रेमचंद पूर्व युग का उपन्यास साहित्य

प्रेमचंद पूर्व युग के उपन्यासों के उद्देश्य के दृष्टि से दो भागों में विभाजित किए गए हैं। 1. शूद्र समाजवादी भावना। 2. श्रीवनवास दास के उपन्यास श्रीवनवास दास के उपन्यास 'प्रेमलक्ष्मी अयोध्याहसह' और 'वास्तव शायद्वत' का प्रथम उपन्यास मानते हैं। समकालीन उपन्यास के क्षेत्र में क्रांतिकारी परिवर्तन किया।
उपन्यास का विकास

उद्देश्यपर इन उपन्यासों में राधाकृष्ण दस कृत 'निन्दाह्य हिन्दू', ठाकुर जगमोहन कृत 'श्यामा स्वप्न' भी प्रमुख है।

इस युग में ऐवतहावसक उपन्यासों की रचना भी की गई। भारतीय इतिहास के अतिरिक्त से कथावृत्त का चयन किया गया। इतिहास और कल्पना के समन्वय द्वारा इन उपन्यासों का नया रूप दिया गया। ऐवतहावसक उपन्यासकारों में बंगाली शाह सुल्तान गोस्वामी ने 'आदशा रमणी', 'हरदय हारिणी', 'ताराराज', 'रबिया', 'प्रसा बाई', 'चन्द्र रज राम' कथाओं के अंतर्गत इन उपन्यासों दिखाये गए।

इस युग में ऐवतहावसक उपन्यासकारों में गंगा प्रसाद गुप्त कृत 'आदशा बिमी', 'ह्रदय हारिणी', 'ताराराज', 'बाई', 'विनज', 'पन्ना बाई', 'लखनऊ की कब्र' कथाओं का प्रमुख है।

इवतहास और फिल्म के समन्वय द्वारा इन कथाओं को नया रूप दिया गया। ऐवतहास और कल्पना के समन्वय द्वारा इन कथाओं के अंतर्गत इन उपन्यासों का नया रूप दिया गया।

(2.) प्रेमचंद युग का उपन्यास साहित्य

प्रेमचंद युग के आगमन से हिंदी उपन्यास के क्षेत्र में नए युग का सूत्रपात होता है। उपन्यासों की व्यवस्था के धरातल पर लाने का श्रेय इस युग के उपन्यासकारों को जाता है। प्रेमचंद ने सामाजिक –एकता, राष्ट्रीय भावनाओं, धार्मिक जीवन के समन्वयों को साहित्यिक रूप से व्यक्त किया। यह युग उपन्यास का प्रौढ़ युग कहा जाता है।

प्रेमचंद युग का उपन्यास साहित्य

प्रेमचंद का योगदान बहुमूल्य है। यही वजह है दक पाठक को कहीं भी पढ़ने में बाधा महसूस नहीं होती है। इन्होंने इन उपन्यासों में व्यवहारिक भाषा का प्रयोग किया। इन में प्रेमचंद की अनुवादी उपन्यास का प्रमुख है। इन्होंने इन 'सेवासदन' के बाद 'प्रेमाश्रम', 'वनमाला', 'मन्त्रियुवम', 'कायाकल्प', 'गबन', 'कमािूवम', 'गोदान' उपन्यास वलखे।

क्या आप जानते हैं?

सूर्य प्रेमचंद की स्मृति में भारतीय डाक की ओर से 31जुलाई 1980 को उनकी जन्मशती के अवसर पर 30 पैसे सूचित डाक टिकट जारी की। गोरखपुर, जिस स्कूल में वे शिक्षक थे, वहां प्रेमचंद साहित्य संस्थान की स्थापना की गई है। प्रेमचंद के सेवासदन पर 1938 में सुब्रह्मण्य ने फिल्म बनाई। गवन (1966) और गोदान (1963) पर भी फिल्में बनी। 1980 में 'निर्मला' उपन्यास पर बना धारावाहिक भी काफी लोकप्रिय रहा।
उपन्यास का विकास

प्रेमचंद साहित्य को केवल मनोरंजन और विलासिता से जोड़कर नहीं देखते। वे उन्ही साहित्य को खरा मानने के पत्थर थे जिसमें उच्च-चित्र, स्वाधीनता भाव, जीवन की सवालों हो। इसके उपन्यासों में भारतीय जन-जीवन का चित्रण है। प्रेमचंद में भारतीय कृषक जीवन से जुड़ी समस्याओं को दर्शाया है। उन्होंने अनमोल चित्राव, देहेज की समस्या को दर्शाया है। रंगमूलित में समाज के विभिन्न बंगों का एक माहौल विषय विषयों में चित्रण किया है। देशी रियासतों का ब्रिटिश समाज के साथ मिलकर भारतीय जनता पर क्रिया जाने वाले अत्याचारों का मर्मस्थान रचना किया है। 'काव्यकल्प' में जागीरदारी प्रथा के नाम किसानों पर क्रिया जाने वाले अत्याचारों, रियासतों के उत्तर-स्वर्गों पर क्रिया जाने वाली धन की बाँधी की विन्दुरपूर्वक बताया है। 'प्रतिवाड़ा' में आर्थ समाज की सुधारवादी उपक्रम और सनातन हिन्दू उपक्रम के माध्यम से दो विरोधी मूल्य उपक्रमों के द्वारा को दर्शाया है। समाज में विधवा नारी का जीवन किसी अभिशाप से कम नहीं होता है। नारी जीवन से जुड़ी इस गंभीर समस्या के विभिन्न शोधों को इस उपन्यास के माध्यम से उठाया है। प्रेमचंद ने हर तरह से सुधारवादी उपक्रम को अपनाकर उपन्यास रचना की है। 'गांव' में रामानाथ के छुटे दिखावे, प्रदर्शनप्रतियोगिता, ठाकर द्वारा जुड़े उपक्रम उसके परिवार को संगता प्रदान करते हैं। इसमें पुनः उपन्यासकार प्रेमचंद ने वेदांत तत्त्वों का मूल कारण अहिंसा बताया है। 'कर्मशृवत' में इनके सामाजिक-राजनीतिक स्तर पर ज्यादा अवक्ष को दर्शाया है। नारी-स्वतंत्रता के मार्ग में सामाजिक मूल्य-युग्म को बाँधक मानते हैं। समाज में आत्म अच्छता समस्या को भी उठाया है। गाँधीवादी विचारधारा से प्रभावित इनके उपन्यासों में समाजिक ज्ञान के अंतर्घात की मांग है।

इस युग के अन्य उपन्यासकारों ने भी सामाजिक ज्ञान का चित्रण किया है। विश्वभरनाथ कौशिक के उपन्यास 'भिक्षारिणी' और 'माँ' में व्याख्या के साथ-साथ आवश्यक भी सामाजित है। 'माँ' में एक माँ के आदर्श चरित्र के साथ-साथ वेष्टावृत्ति की दुःखों को भी दर्शाया है। 'भिक्षारिणी' में रामानाथ और जससी की प्रेमवाद के माध्यम से अत्याचारी विवाह की स्वीकृति को लेकर उत्पत्ति समझा और समाज की मानकिता को दर्शाया है। रहुल शास्त्री ने याथार्थवादी एतिहासिक उपन्यासों की रचना की। 'भाग्य की प्यास', 'अमर अंत्तिका', 'आत्मवाह' इसके सामाजिक उपन्यास है। 'वैशाखी की नगरकूड़', 'सोमनाथ', 'शिवंदाद' आदि इनके एतिहासिक उपन्यास है। वृद्धावन नाट हर्म ने एतिहासिक, सामाजिक उपन्यासों की रचना करके अपनी विशेष पहचान बनाई। 'प्रांदुंड्र', 'शौर्य की रानी लक्ष्मी वाई', 'बाजरी' की पद्मिनी', 'मुगलवानी', 'कच्चर', 'आदि इनके प्रमुख एतिहासिक उपन्यास हैं। लाल', 'अमर बेद', 'कुंदली' चक्क 'संगम', 'प्रत्यक्ष आदि इनके प्रमुख सामाजिक उपन्यास है।' राखिका रमण प्रसाद सिंह कुट 'पुरुष और नारी', 'पूर्व और पश्चिम', 'राहुल', 'कुंदली' आदि उपन्यास आदर्शों के व्याख्यान ज्ञान से जुड़े हैं। भारती नारी के विविध रूपों
उपन्यास का विकास

रामचंद्र प्रसाद ने इस युग में दो उपन्यासों की विचारण की हैं- 'कं काल' और 'वततिली'। दोनों ही उपन्यासों में समाज के उत्थान-पतन का वचत्रर् दकया गया है। प्रेमचंद युगीन उपन्यास सावहत्य में आदशावाद के साथ ऑप्शन का प्रचार दी है। इससे समाज में व्यवस्थापन का महत्त्व प्रस्तुत किया गया है।

(3.) प्रेमचंदोत्तर युग का उपन्यास सावहत्य

इस युग में उपन्यास की दो प्रकाि की शैवलयों का क्षेत्र हुआ वजन्हें प्रेमचंद शैली औि प्रसाद शैली कहा गया। दोनों शैवलयों में मुख्य ही प्रश्न औि घटना को लेकि है। प्रेमचंद की शैली में घटना को प्रमुख स्थान ददया गया औि प्रसाद ने मानव-मन के विवेदन द्वािा उपन्यास सावहत्य की रचना की।

मनोवैज्ञानिक उपन्यास

जैनेन्द्र का पदापार् उपन्यास के क्षेत्र में प्रेमचंद युग से ही हो गया था। इन्होंने मनोवैज्ञानिक उपन्यासों की रचना की। 'रख', 'सुनीता', 'कल्यानी', 'सुखदा', 'गंगा', 'बज-नजर' आदि इनके उपन्यास हैं। इनके उपन्यासों में व्यक्तिक ने जीवन से जुड़े प्रश्न औि घटना की दृवि से अनेक परिवर्तन दिखाई दिए। मनोवैज्ञानिक, आंचलिक, प्रगतिवादी, ऐतिहासिक आदि विभिन्न विषयों से सम्बंधित उपन्यासों का अपना योगदान दे रखे थे।

इन्होंने उपन्यासों द्वािा व्यक्तक पीड़ा औि मानव-मन के द्वंद्व को प्रस्तुत किया। एक अथाहीन बालक, 'शेखि एक जीवनी' ने उपन्यास सावहत्य को नया मोड़ ददया। इस उपन्यास की िूवमका में ही अज्ञेय ने वलखा है दक शेखि ने बच्चा या बड़ा आदमी नहीं लेकिन एक जागरूक स्वतंत्र औि 'शेखि इमानदाि' द्वािा उपन्यास की रचना की।
उपन्यास का विकास

चंद्रमाधव, रेखा और गोरा का चरित्र मिलता-जुलता होते हुए भी बिघमता लिए हुए हैं। डा. रामचरित शर्मा ने अनेक के चरित्रों को विदेशी माहितियाँ की अनुकूल माना है।

डा. देवराज के ‘पथ की बोध’, ‘बाहर मीनर’, रोड़े और पत्थर’, अनेक के दायरे’, में वे और आप’, ‘दूसरा बुध’ आदि उपन्यास हैं। इन्होंने पुरुष की खी के प्रति अनन्यवादी दृष्टि,चक्ति स्वातंत्र्य,परमर्शात्मक बिवाह संस्था में उत्पन्न जुलू और निराशा आदि विषयों का बाहर बनाकर उपन्यास रचना की है। धर्मविद्वान भारती ने ‘पुनास्का’ का देवां’ और ‘सूरज का मात्रां घोड़ा’ उपन्यास लिखा। इनका पहला उपन्यास युवा वर्ष में जितना चरित्रत रहा उसना गंभीर पाठकों के बीच नहीं। वजह यह उनके कथन में रोमाञ्चक उपकरणों का अविश्वसनीय प्रयोग। ‘सूरज का सातवां घोड़ा’ में सूरज के छु घोड़ो समेत रथ को जजर पिकाकर उन्होंने युवा घोड़े के आते के दृष्टि में अभावन दृष्टि रखी है। यह सातवां घोड़ा ही मध्य वर्ष को मोहम्ब स्तिथि में सुरक्षित बाहर निकलेगा।

इसी परंपरा में लघुकथा-पत्र लाल का ‘धर्मी की आंख’, ‘बाया का घंटमाल’, ‘बाल का पौधा’, तरेश मेहता का ‘दूसरा समुद्र’ प्रभावक मात्र बच्चों का ‘बाहर और संभान’, विख़िर गोयल का ‘माध्यम के बड़ह’। भारत भूम्पण अवाल का ‘लोटीनी तहरों की बासुंदरी’ लघुकथा को भागी दृष्टि का आत्मा’ और ‘डीरेक्टरा’ उपन्यास आते हैं।

सांस्कृतिक, एतिहासिक उपन्यास

इस कड़ी में बृद्धि लाल वर्मा कृत ‘टिकडूंडर’, ‘विराट की पत्नियों’, ‘भूम्पणकियों’, ‘लाल की रात’ है। उन्होंने विभिन्न नारी पत्रों के माध्यम से बी-गर्दू मा का बाहर, सामान्यवाद के भारत में एतिहासिक भूमिका, जजर होने परमध्यक्रांग, राष्ट्रीय मुक्ति आन्दोलन आदि विषयों को लेकर उपन्यास रचना की। आचार्य नेन्द्रनाथ के ‘बैलों की परबहण’, ‘धर्म’, ‘रसदास’ जैसे उपन्यासों का लाभ एतिहासिक कठोर को अभावन बनाया। बीच धर्म, दिनू धर्म म व मधूम गजनवी मानव-जाति के प्रति गहरी संदेश को त्यस्क किया है। आचार्य हज़ारी प्रसाद दिव्येंद्र के उपन्यासों में इतिहास और संस्कृति का अदृश्य समझन में देखा है। ‘देविा’ ‘जाजलवेदीजी’ ने अतीत के सन्दर्भ में वर्तमान मिल्यास्तियों को पहचानने का प्रयत्न किया है। इतिहास और वर्तमान को जोड़ते हुए उन्होंने मानवबादी वृद्धि को अनावय भी है। इनके उपन्यासों में इनका पात्रिक रूप दिखाई देता है।

शिवप्रसाद मिश्र रूट ने ‘महानगर’ में निम्न, मध्यम वर्षीय पत्रों के माध्यम से काफी के दो सी वर्ष के सांस्कृतिक व मानवीय दृष्टियों को प्रसारित किया है। राजीव नानकेवाल ने ‘पाणिपुसू भोज’ के माध्यम से दो जीवन जीवन और जीवन-मूल्यों के बीच उत्पन्न तनाव को रेखांकित किया है। यह उपन्यास सोंच, वच और बिखरे ऐसे नीने पात्रों पर केंद्रित है। शिवप्रसाद सिंह ने ‘नीला चौंद’ में एतिहासिक पुस्तुकूल को सांस्कृतिक रंग में रंगा दिखाया है। इन्होंने हिंदुवैदिक दृष्टि अपनाते हुए मुसलमानों और तुकड़े के भारत पर होने वाले अवनति कर बनाकर उपन्यास लिखा है। रामेश राघव के ‘लशिमा की आंखें’, ‘महायात्रा गाथा’ भी एतिहासिक उपन्यास की थेसी में आते हैं।

सामाजिक यथार्थवादी उपन्यास

सामाजिक यथार्थवादी उपन्यासों में जीवन के यथार्थ का चित्रण होता है। प्रेमचंद युग के उपन्यासों में भी सामाजिक यथार्थ का चित्रण हुआ परस्तु वह आदर्शमूलक यथार्थवाद के दायरे में बाहर नहीं निकल पाया। प्रेमचंद एक ऐसे समाज का स्वयं देखते वे जहाँ पुरानी सही-गती मानवता, परमचार, समाज के विकास में बाधा न उत्पन्न कर। इन्होंने सामाजिक समस्याओं का चित्रण करके उनके सूचार का रास्ता भी पाठकों को दिखाया। नीली उसी तरह प्रेमचंदेंद्र युग में सामाजिक यथार्थ की पृष्ठभूमि पर उपन्यास रचना की गई। दक्ष और विन्न इन तीन पात्रों के बीच उत्पन्न तनाव को साइनाकित किया है।
उपन्यास का विकास

इन्होंने प्रेमचंद युगीन समस्याओं में समाज को जुड़ते दिखाया है। इन्होंने प्रेमचंद युगीन समस्याओं में समाज को जुड़ते दिखाया है। इन्होंने प्रेमचंद युगीन समस्याओं में समाज को जुड़ते दिखाया है। इन्होंने प्रेमचंद युगीन समस्याओं में समाज को जुड़ते दिखाया है। इन्होंने प्रेमचंद युगीन समस्याओं में समाज को जुड़ते दिखाया है। इन्होंने प्रेमचंद युगीन समस्याओं में समाज को जुड़ते दिखाया है। इन्होंने प्रेमचंद युगीन समस्याओं में समाज को जुड़ते दिखाया है।

प्रगतिवादी उपन्यास

हिंदी साहित्य के क्षेत्र में प्रगतिवाद सबर्धारा के प्रति सहारमुक्त, पंजीवाद के प्रति आक्षेप, सामाजिक विचारधाराओं पर प्रहार करने के परिणाम स्वरूप आया। पंजीवाद और सबर्धारा का संयोजन इस विचारधारा के मूल में था। काव्य के क्षेत्र में तो प्रगतिवादी कवियों ने जमकर लिखा। उपन्यास माहिका भी इससे अदृश्य नहीं है। प्रगतिवादी उपन्यासकारों में वश्वास, राहुल साराज्याथ, नागाजुआन, भृत्रि प्रसाद गुप्त रंग, राजसोय रघुगोति, नीरह शहीद, अमृत रज आदि के प्रमुख हैं। प्रगतिवादी साहित्यकारों ने जीवन का विषय उपन्यास में देखा। उपन्यास का विकास इस प्रकार हुआ है: प्रथम उपन्यास में पूंजीवाद के नुकसान और उन पर अवस्था का सामना किया गया। द्वितीय उपन्यास में इन्होंने जीवन दर्शन का विचार किया। तीसरा उपन्यास में जीवन का अमृत विश्वास दिखाया गया।
उपन्यास का विकास

'जव योधें', 'जीने के लिए', 'नेपाली', 'मधुर स्वर', 'द्विवेदी', 'बिस्मृत यात्री' प्रमुख हैं। इन्होंने अपने उपन्यासों के माध्यम से समाजवादी देशों की उपलब्धि का व्याख्या एवं एक नए समाज का नव–निर्माण, समाज में व्याप किस्मता के प्रति विद्रोह दर्शाया है। नागार्जुन ने 'रतनावली की चर्ची', 'वल्लवरामा', 'बाबा बंदमराम', 'विगर्ण', 'रुक्ष', 'सेलों', 'दुर्भिक्षु', 'जमलिफा के बाबा' आदि उपन्यासों की रचना की। वर्ग-संघर्ष, जनरल भोली नींदिया और उनके विस्तार्विद्रोह, हस्ती पाठकों से जुड़ी समस्याएं आदि विषयों को कथा के लिए आधार बनाकर इन्हें उपन्यास रचना की है। भैरव प्रसाद गुप्त प्रमुख प्रतिवादी लेखक है। इन्होंने प्रतिवादी सामाजिक की फूल प्रतिवादी को पूरी संबंधतना के साथ उपन्यास विश्व में दासा है। 'रोने', 'मठान', 'अंजरे और नया आर्थम', 'कालिदास', 'सती मेधिया का चोरा', 'भागवान देवता' आदि उल्लेखनीय उपन्यास हैं। इन उपन्यासों का मुख्य विषय जमींदारी व्यवस्था में जनता पर किये जाने वाले अटाचारों को मानिक दंग से अभिव्यक्ति दी है। इन्होंने सामाजी व्यवस्था में पूर्वजपति और मजदूर बार्ग के संघर्ष को वाणी दी है। रामचंद्र राय ने “पारोदें”, ‘डुँज’, ‘गिंदा-साधा रास्ता’, ‘जब तक पुकार’, ‘स्वामी मेरा घर’, ‘मुद्यां का किरना’, ‘पुदों के ऊपर’, ‘रत्ना की बात’, ‘लखिया की आंख’ आदि उपन्यासों के माध्यम से समाज को कई रूपों में अलग समस्याओं में जुड़ते दिखाया है। एक विचारधारा लेखक होने के नाते उन्होंने अपने कर्त्त्व का विवाह बबूले किया है। अमृतार्जुन ने नाम-नाम का शेयर, 'वृक्ष-पूर्ण', 'पुंजा', ‘बीज’ रचनाओं के माध्यम से व्यंग्य रूप में वे शासन- तंत्र की निगड़ करते हैं। भीमा गहलोत ने अपने उपन्यासों का सामाजिक संदर्भ से जोड़कर कथा का रूप दिया है। इन्होंने पूर्व प्रसाद समाज में नारी उत्सिद्ध की समस्या को उठाया है। ‘आरोहे’, ‘गुलाम’, ‘पाइडीय’, ‘तमस’, ‘उस्तानी’ आदि इनके उपन्यास हैं।

औरतिक उपन्यास

हिंदी उपन्यास के क्षेत्र में अंचलिकी का परम्परा का आरंभ सन 1950 में हुआ। इस परंपरा का प्रथम उपन्यास फणीखर नामक 'पृथ्वी आंचल' है। इस उपन्यास ने युवाओं ने आंचलिकी दिखाया है। इन्होंने अपने उपन्यास के माध्यम से समाज को कई रूपों में अलग समस्याओं में जुड़ते दिखाया है। इन्होंने पूर्व प्रसाद में स्थापित व्यवस्था से जुड़ी समस्याओं की और पाठकों का ध्यान आकर्षित किया है। जैसे-जैसे प्रत्यया के अंत, नेताओं की स्वाधीनता-प्रारंभिकता, ‘वृक्ष’, 'जोल', कितने चोराह इनके अन्य उपन्यास हैं।

रामदास मिश्र 'पारी के प्राचीन', 'जल दुक्तान हुआ' जैसे गाँव से जुड़ी समस्याओं को कथा के लिए जुना जो सीधे पानी से जीवन पर्याप्त शिक्षण संस्थान, दिल्ली विश्वविद्यालय
उपन्यास का विकास

जुड़ी है। जहाँ बाह्र अपना तंदुर दिखाती है। 'सुक्ता हुआ तालाब' में इन्होंने श्रीमान जीवन की विकृतियों को उजागर किया है। उदय शंकर भट्ट ने 'सागर नहरे और मनुव्य' में समुद्र जल पर रहने वाले मछ्छुराओं के जीवन और उसमें जुड़े विभिन्न पहलुओं पर प्रकाश डाला है। बिवेकी राय कृत 'बच्चन', 'पृथ्व पुराण', 'श्रेष्ठ-पता', 'मंगल भवन', सागर शेष है आदि अंतर्दृष्टिक उपन्यास है।

शीतल मशीनानी ने कुमाऊंगी जीवन पर 'हौलदार', 'जोधी मुदी' लिखा। राजेन्द्र अवसरी आदिवासी कीलाई समाज पर 'सूरज किरण की छाँद', 'संगम के पूल' उपन्यास की रचना की। अंतर्विश्वास की सारी विषयवस्तुओं को अंतर्दृष्टिक उपन्यासों के मध्यस्थ प्रस्तुत किया गया। ऐसे उपन्यासों में रहन-सहन, भाव, आचार-विचार बनी सही का वर्णन अंतर्विश्वेत्र के अनुसार किया गया है।

(4.) स्वतंत्रत्व और समकालीन उपन्यास साहित्य

स्वतंत्रता प्राप्त के बाद उपन्यास के क्षेत्र में ढीक उसी तरह से बढ़ता आया जैसे स्वतंत्रत्व भारत की परिस्थितियों में बढ़ता आया। हिंदी उपन्यासों की नवीनतम धारा को प्रयोग वादी उपन्यास या आधुनिकता बोध के उपन्यास कहा जा सकता है। आयुक्तीकरण, ख्यात-क्वलिस्वर, बदले परिवेश, बालिका सभ्यता के दुष्परिणाम, महानगरीय जीवन, अंकलापन, निराशा, धोर अवसाद, दंगा आदि विषयों एवं भावों से जुड़कर हिंदी उपन्यास का वस्तु और प्रकृतिया नवीन होती गई। स्वतंत्रता के बाद भारत के समुद्र कुंड और तहर की नई वृत्तियाँ सामने आयी। निर्माण वर्गों के उपन्यास 'बेईन' में युगोप के एक नए का चित्रण है। इसमें महामूर्त के बाद नाम में फैले अंकलापन को बढ़ी संबंधशीलता के साथ अभिव्यक्त किया है। 'ताल टीन की छेत', 'एक चित्रकुंड', 'रां एक रिपोर्टर' इनके अन्य उपन्यास है। शरद देबड़ा के 'टूटी इंडिया' में हो नारियों और एक पुरुष के विकास को नए इंग्लिश से रचा गया है। मनोरम माध्यम मुक्ति का विपण में मध्य वर्तमान सुधा के भक्तकों को दर्शाता है। राजेन्द्र यादव के 'प्रेत बोलते हैं', 'सारा आकाश', 'उबड़े हुए लोग', 'शह और मात', 'अन्यरी -अन्यरी पूल' आधुनिक जीवन के परिवर्तनशील जीवन नूतनों को उद्धारित करते हैं। श्री लाल शुक्ल का उपन्यास 'राग दरवारी' इसकी व्याख्या का आधार है। 'पहला पड़ाव', 'सकान', 'भीमाशेखर' इनके अन्य उपन्यास हैं।

क्या आप जानते हैं?

श्री लाल शुक्ल के उपन्यास 'राग दरवारी' का अंग्रेजी सहित 15 अन्य भारतीय भाषाओं में अनुवाद हो चुका है। इन्होंने एक जापूती उपन्यास 'आदमी का महर' भी लिखा जो हिन्दुस्तान सास्तिक पत्रिका में प्रकाशित हुआ। इन्हें साहित्य अकादमी पुरस्कार के साथ सन 2008 में पद्म भूषण से भी सम्मानित किया गया।

कुलन बलदेव बैद ने 'उसका बचपन', 'नसरीन', 'दर्द ला दबा', अन्य-नाटी' उपन्यास लिखकर समाज की रूप मानसिकता, निमित्ततियों, नारी के जीवन में व्याप असहजता का आधुनिक सत्तियों में जोडकर व्यक्त किया है। राजकमल वैष्णव ने जिस प्रकार अपने काव्य में विवरण, प्रेम, वामपत्र को वेमानी माना है ढीक उसी प्रकार उपन्यास में भी। 'ननी बहुनी श्री', 'एक अन्य-एक बीमार', 'पुरानी खाना', 'मछली मरी हुई', 'देहाता' इसी तरह के उपन्यास हैं। इसी परंपरा में मोहन
उपन्यास का विकास

राकेश का ‘अंधेरे वंच किमरे’, महदद भाल का ‘एक गति के नोटस’, ‘ममता कालिया का ‘डंगर’, मणिम पञ्चक का ‘सोफेर गेमेनों’ और कृप्या सोबती का ‘सूरजमुखी अंधेरे में’, ‘जिंदगीभाषा’, ‘विलोचनित’ आदे हैं। उपन्यासवाद का ‘पचन बम्बे लाल सियास’, ‘जय राया’, ‘स्कोटलैंड नहीं राजिया’ भारतीय नारी की दुधरा का चित्रण करता है। नायिक भारत से विदेश जाती है और फिर विदेश से भारत आती है। वह संस्कृति के बदलाव में बुद को असज्ज महसूस करती है। न चाहते हुए भी वह अल्केल में जीती है। गिरिरघ गोपाल का उपन्यास ‘करीना और कुछांग नएपर बोध से जुड़ा हुआ है।

इसका नायक सुरेंद्र कुंडा, धर्मचार और अनिवार्य जितेंद्र को भोगता है। मसूं भंडारी के ‘एक इच सुन्नवान’, ‘महाभोज’, ‘आपका बंदी’ तीन उपन्यास है। इन्हें पहले राजेंद्र यादव के साथ नस्लीय उपन्यास है। उपन्यास ‘आपका बंदी’ का वर्तमान-पिता के अलगाव की पीड़ा का अंदर महसूस करते हुए एक कानक शायद की तरह हो जाता है।

उसका अलेक्सान्दर गहरी संबंध जागृत करता है। प्रेमचंद युग से पूर्व उपन्यासों में चरित्र की प्रशान्तता नहीं थी। प्रेमचंद ने पाँचों की सहज,जोशीव और स्थायीत्व कायम। प्रेमचंदोत्तर युग में वह पत और प्रशान्त हो गया। सामान्य मुन्य के जीवन में जूली कोडी-बडी समस्याओं का उपन्यास के कथानक के लिए चुना गया। इसमें दो में धिंग प्रसाद सिंह के अन्य-अन्य वैदित्तण, ‘दीन आप मृति हैं’, ‘जवान’, ‘मंदलिया’ है। मार्केंस ने ‘अप्रियदी’ द्वारा कोण्षी-शाशन के मौलाना की स्थिति को दर्शाया है। दुर्गशन ने ‘एक काराय अंशदीन’, ‘पुत्रकार’, ‘सोफेर गोपाल कला सवार’, ‘जय’ आदि उपन्यास लिखाय न्याय व्यवस्था, धम और संस्कृति, शिशु रचनाओं आदि विषयों का उदय है।

जगदीश वल्ल माथुर के उपन्यासों में एक नई जीवन दृष्टि मिलती है। ‘यादों का पहाड़’, ‘आधा पुत्र’, ‘भूखी भर कांड’, ‘कभी न माजी बेस्ट’, ‘भरती धर न अपना’ इनके प्रमुख उपन्यास है। गिरिरघ दिशर ने ‘लोग’, ‘दाई पर’, ‘भिंगिया घर’, ‘यात्राएं’ आदि उपन्यासों में इनका रचनात्मक कौशल निर्भर कर आया है।

समाजिक,राजनीतिक, आधिक हर दृष्टि से समाज की बुनियादी समस्याओं को जटिल-परमाणु उपन्यास रचना की।

समकालीन दौर में उपमानोत्तव, सामाजिक हिंदी, निम्न मध्यम वर्ती जीवन, आदिवासी जीवन का तबा, नारी-मुक्ति, पितृ-शासन रूप में मान्य भाषाम् में नारी का दयार, दिव्यम युवा पीडी, पारिवारिक विवाह, पता आदि ऐसे अनेक विषय हैं जिन से हुज्जक समकालीन उपन्यास साहित्य और तीव्र गति में बढ़ा। असंग बजाहत का ‘सार आसमान’ दो पीड़ियों के आसमान में पकड़ा हुआ है। इसके अन्य उपन्यास भी हैं-कामेलानाथ का ‘कान-कला’, दिखाया गया है। नोटियाल का ‘सूरज मुक्त है’, तथा सरसवी का ‘किलकार-बाबा बायदास’। भायानांद मिथू के ‘प्रथम शैल पुत्री’ और ‘संतपुर’ प्रातितासिक उपन्यास हैं।

सविनाध कुलार शुल्को कुलार की क्रिसल्य एक कल्पना की चितरता पर आधारित है। इसमें इन्होंने निक धमर मध्यमबंगी घुटन, पीड़ा, दंड, असुरक्षा का भाव को अभिव्यक्ति की है। इनके विकल्पक ने ‘खेति के संरक्षीय प्रमुख’ पीड़ा के प्रशमनों के आशा-संकुचन का ध्वनि-विभाजित एक इंच मुस्कान।

विवरण के अंतर्गत ‘जवाहर नगर’ में 1975-77 के आपत्तिकाल और मध्यवर्ती विभाजिता का चित्रण है।

चन्द्रकांता ने ‘अचलन’, ‘बाङी सब खेरित है’, और ‘एलान गली जिन्दा है’ उपन्यास लिखे। पहले दो उपन्यासों में जीवन में जुड़े विभिन्न बदलों-घटक अनुभूत है। ‘एलान गली जिन्दा है’ में कर्मीय समाज की अवधारणाओं – बुराइयों को उजागर करा दिया है। यह उपन्यास मध्य वर्ती जीवन के विविध आयामों को दर्शाता है। अमरकोट के ‘इन्हीं
उपन्यास का विकास

हरियालों में उपन्यास बनिया क्षेत्र की जीवन-विविधता समेटे हुए है। 1942 के ‘भारत छोड़ो आन्दोलन’ को आधार बनाकर लिखे गए इस उपन्यास में जनान्दोलन और जनक्षत्र को वाणी दी।

हिंदी उपन्यास साहित्य में नारी-विषय को चरमसीमा तक पहुँचाने वाली महत्त्वपूर्ण लेखिकाओं की शृंखला मिसंदह सराहनीय है। निराला रामचंद्र (अंवार), प्रभा बेंतान (क्रिसमन्स), पीयूषा गर्ग (कथगुलाब), नृत्यरथी पुष्पा (काल, इदन्नमम), गीतांजलि सिंह (निरोहित) इत्यादि उपन्यासों में नारी अभिव्यक्ति से जुड़े विभिन्न मुद्दों को उठाया गया है। भारतीय समाज में नारी पर पुरुष सत्ता हावीहै। वहमोक्ष, अन्याय, शोषण का शिकार बनती है। जिसके परिणामस्वरूप वह कभी-कभी विद्रोह कर बैठती है। पंकज विश्व ने उपन्यास ‘उस बिल्डिया का नाम’ पुरुष प्रधान समाज में नारी की मौन स्थिति को दर्शाता है। मृत्युजय ‘पतंगपुरुष पुराण’ में भी यही वर्णित है कि इन प्रकार नारी अपने अधिकारों में बंचित है।

भागवानदास मोर्वाल (काला पहाड़), दूरदान्त सिंह (बाबूरी कलाम, हमारा शहर उस वर्ष), तेजनार (काला पादरी), कुलभूषण (कितने पाकिस्तान), अजय बन्धु (नरक कुंड), रामेश कोहली (तोड़ो कािा तोड़ो) निररत निपोल (पहला तिरंगमरीक्षण), संजीव शुक्ला (शूकर), आदि उपन्यासकारों ने वर्तमान सन्दर्भों में उपन्यास को सामाजिक जीवन के प्रश्नों में जोड़कर समाज के समस्त विषयक प्रश्न रखे हैं। इन प्रश्नों का हल उपन्यासकारों ने अपने उपन्यासों के अंत में दिखाया तो है और पाठकों को सोचने के लिए प्रेरित भी किया है। अज्ञात उपन्यास के कथ्य जीवन के अंत में दिखाया तो है वह दकसी न किसी रूप में हर व्यक्ति की समस्या से जुड़ा महसूस होता है। हिंदी उपन्यास साहित्य ने आधुनिक युग का आज-आने को आशातीत प्रस्तुति की है इसके प्रभाव सराहनीय है।

सन्दर्भ ग्रन्थ-सूची

हिंदी साहित्य का इतिहास : रामचंद्र शुक्ल
हिंदी साहित्य का इतिहास : सं. डा. नगेन्द्र

लघु उत्तरीय प्रश्न

1. इनमें से कौन-सा उपन्यास प्रेमचंद का नहीं है?
   क. गजबन ख. गोदान ग. कुलपानी घ. रंगप्रभुमि

2. इनमें से कौन-सा उपन्यास अच्छा लिखा है?
   क. परम ख. मेला ओंसल ग. गुलामों का देवता घ. आफाका बंदी

3. ‘मुहा-लिच’ उपन्यास के रचनाकार कौन है?
   क. इलाहाबाद जोशी ख. ब्राह्मण माचे ग. व्यक्ति घ. कुमारी सोबती

4. रामचंद्र शुक्ल ने हिंदी का प्रथम उपन्यास किसे माना?
उपन्यास का विकास

क. भाय्यवर्ती खंडेठ हिंदी का ठाठ ग.परीशा गुरु घ.मूनन प्रवर्धनरी

5. ‘शेखर एक जीवन’ किसका उपन्यास है?

क. जनेन्द्र खंडेठ ग.राजेन्द्र यादव घ.मंचू दुबारी

उत्तर -1.ग, 2. ख, 3.ग, 4.ग 5.ख

निम्नलिखित प्रश्नों के सही/ गलत में उत्तर दीजिए।

1. ‘चंद्रकांता’ देवकी नंदन खत्री की रचना है। सही/गलत

2. जयशंकर प्रसाद ने 4 उपन्यास लिखे। सही/गलत

3. परिवार रणू अचलिक उपन्यासकार थे। सही/गलत

4. ‘ठेठ हिंदी का ठाठ’ अयोध्यासह उपाध्याय हरिओध द्वारा लिखित उपन्यास नहीं है। सही/गलत

5. एक पद्ध ने ‘ममता कानिया’ का उपन्यास है। सही/गलत

उत्तर- 1.सही , 2.गलत , 3.सही, 4.गलत , 5.गलत

रिक्त स्थान भरिए

1. ‘चंद्रकांता’ _______ उपन्यासकार का उपन्यास है। (देवकी नंदन खत्री/मोपालक गहरमी)

2. प्रेमचंद के उपन्यास _______ विचारधारा से प्रभावित हैं। (माक्वावादी/गंधीवादी)

3. वृन्दावन लाल बर्मा _______ उपन्यासकार हैं। (सामाजिक/ऐतिहासिक)

4. ‘कंजर’ और ‘तितली’ _______ के उपन्यास है। (जनेन्द्र कुमार/जयशंकर प्रसाद)

5. इलाहाबाद जोशी ने _______ उपन्यास लिखे। (मनोवैज्ञानिक/और्चितिक)

उत्तर -1.देवकीनंदन खत्री, 2.गंधीवादी , 3.ऐतिहासिक , 4.जयशंकर प्रसाद , 5.मनोवैज्ञानिक

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

1. हिंदी उपन्यास की विकास यात्रा पर प्रकाश दालिए।

2. प्रेमचंद के हिंदी-उपन्यास साहित्य के विकास पर प्रकाश दालिए।